Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

आंचलिक उपन्यास बनाम आंचलिकता

Suman*

M.Phil. (Hindi) NET, Village Bhodiya Bisnoiya, Distric Mandi Adampur, HIsar

सार – *आधुनिक युग में नव्यतर विधाओं के संदर्भ में 'आंचलिकता' एक दिशा की उपलब्धि है। व्यष्टिसत्य और समष्टि-सत्य का उपन्यासों के धरातल पर दो रूपों में विकास हुआ है। व्यष्टि सत्य को लोगों ने माक्र्स, फ्रायड, एडलर, युंग, सात्र्र आदि की वैचारिक भूमिका पर ग्रहण किया है, तो समष्टि सत्य की चुनौती को 'आंचलिकता' ने स्वीकार किया है। उपन्यास के प्रसंग में 'अंचल' 'आंचलिक' तथा 'आंचलिकता' आदि शब्दों पर विचार करना आवश्यक है। 'अंचल' शब्द संस्कृत की 'अंच्' धातु में 'अलच्' प्रत्यय के योग से बना है। भौगोलिक आदि सीमाओं से घिरे हुए जनपद को 'अंचल' की संज्ञा दी जा सकती है। वस्तुतः 'अंचल' शब्द स्थान विशेष का सूचक है। 'आंचलिक' शब्द की संस्कृत व्याकरणानुसार सिद्धि नहीं की जा सकती। 'अंचल' से अंचलीय, अंचलता, अचलत्व आदि शब्दों का निर्माण होना चाहिए किन्तु इन शब्दों की अपेक्षा 'आंचलिक' शब्द सर्वस्वीकृत एवं प्रचलित हो गया है। 'आंचलिकता' शब्द भाववाचक है।*

---------------------------------x---------------------------------

हिन्दी की स्व-प्रकृति के कारण यह शब्द चल निकला है। उपन्यास के संदर्भ में 'आंचलिक' शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपने प्रथम उपन्यास 'मैला आँचल' की भूमिका में किया है। अनेक विद्वान्-समीक्षक 'आंचलिक उपन्यास' को एक स्वतंत्र प्रवृत्ति के रूप में मान्यता देना संगत मानते हैं।1 दूसरी ओर कतिपय विद्वान् उपन्यासों में 'आंचलिकता' के प्रयोग को आंदोलन का रूप देते हैं।2 'आंचलिकता' की प्रवृत्ति आज के साहित्य में अत्यंत सबल है। इस प्रबल प्रवृत्ति की उसी प्रकार अपनी अलग विशिष्टता है, जिस प्रकार सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक आदि उपन्यासों की है। विद्वानों ने आंचलिक उपन्यास को एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में मान्यता दी है।

'आंचलिकता' के स्वरूप निर्धारण, उद्घाटन, प्रस्तुतीकरण आदि में अनेक तत्वों का सामूहिक योगदान होता है। आंचलिकता का सजीव रूप देने में वे सभी तत्व सम्मिलित किये जा सकते हैं, जो क्षेत्र विशेष के जन-जीवन का सांगोपांग तथा सम्पूर्ण चित्र सभी विशेषताओं के साथ उभारने में सहायता देते हैं। वस्तुतः वेशभूषा, जीवनयापन, आर्थिक व्यवस्था, वर्गगत भेदभाव, विश्वास, संस्कार, खान-पान, रहन-सहन आदि सभी उपकरण आंचलिकता के तत्व कहे जा सकते हैं। वस्तुतः अंचल के निवासियों, प्राणियों आदि का सर्वांगीण चित्रण 'आंचलिकता' का महत्त्वपूर्ण तत्व है। इसके द्वारा क्षेत्र विशेष के मनुष्यों का जीवन तथा उनके कार्यों, दैनिक जीवन, समस्याओं आदि का प्रस्तुतीकरण किया जाता है। अंचल विशेष की सभ्यता व संस्कृति के चित्रण में अनेकानेक वस्तुओं का समावेश होता है। डॉ. मक्खनलाल शर्मा के अनुसार, ''उस क्षेत्र या जनपद के स्थानों, वृक्षों, वनों, तरकारियों, पशुओं, पक्षियों, सवारियों, आवासों, विचरण-स्थानों, भोज्य पदार्थों, वस्त्राभूषणों, केश-विन्यासों, गन्ध-द्रव्यों तथा अन्य शृंगार प्रसाधनों, बैठने, सोने और लिखने के उपकरणों, परिवार व्यवस्थाओं, वर्ण व्यवस्थाओं, आश्रमों, मनोविनोद के साधनों, खेल-कूदों, क्रीड़ाओं, लोक विधाओं, ललित कलाओं, त्यौहारों, पर्वों, उत्सवों, लोकाचारों, विश्वासों, मान्यताओं, पौराणिक प्रसंगों, आस्थाओं, भिखारियों, राजनीतिक मान्यताओं, साम्प्रदायिक विचारों, दार्शनिक विचारों तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोणों आदि तथ्यों का विश्लेषण और प्रत्यक्ष या परोक्ष चित्रण किया जाता है।''3 वास्तव में आंचलिकता उस अंचल विशेष की संस्कृति का निरूपण करती है।

स्वाभविकता की रक्षा के लिए वातावरण और सजीवता के लिए परिस्थितियों का होना आंचलिकता का एक अंग है। किसी स्थान विशेष की सभी विशेषताओं को दिखाने के लिए सामाजिक सम्बन्धों, रीति-रिवाज व खान-पान आदि भौगोलिक विशिष्टताओं, जीविकोपार्जन के साधनों एवं भाषा आदि की विलक्षणताओं का वर्णन किया जाना ही वातावरण तत्व है। स्थानीय रंगत आंचलिक उपन्यासों को रोचक व हृदयग्राही बनाती है। आंचलिकता की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से बड़ी सहज व स्वाभाविक होती है। विशेष रूप से स्थानीय बोली के प्रयोग से आंचलिकता लाई जाती है। क्षेत्र

www.ignited.in

विशेष की यथार्थ भाषा अपने ग्रामीण शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, उक्तियों आदि के द्वारा आंचलिकता की प्रस्तुति होती है। आंचलिकता के लिए लोकतत्व का संस्पर्श अत्यंत आवश्यक है। डॉ. सत्येन्द्र ने लोकतत्व को लोक-मानस की अभिव्यक्ति से सम्बद्ध करते हुए उसके विकस की पाँच सीढ़ियाँ मानी हैं- (1) सभ्यता विरहित जंगली जातियाँ, (2) सभ्यता विरहित अनपढ़ ग्रामीण समाज, (3) सभ्यता विरहित निरक्षर नगर-समाज (4) अर्द्धसभ्य, अर्द्ध-शिक्षित नगर समाज (5) सभ्य समाज। इस प्रकार लोकतात्विक स्पर्श आंचलिकता के प्रकटीकरण में सहायक सिद्ध होता है।

'आंचलिक' और आंचलिकता-प्रधान उपन्यासों में अंतर होता है। आंचलिक उपन्यासों में सर्वांगीणता का भाव प्रबल होता है। 'आंचलिकता प्रधान' उपन्यासों में यह सर्वांगीण चित्रण का अभाव होता है। उदाहरणार्थ इस दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यासों में 'ग्राम्यचित्रण' को आंचलिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे ग्रामों का सामान्य चित्रण प्रस्तुत करते हैं किसी क्षेत्र विशेष का 'विशिष्ट' चित्रण नहीं कर पाते। आंचलिक-प्रधान कृतियों में जन-जीवन के चित्रण के साथ-साथ इतर चित्रण का भी अवकाश रहता है जबकि आंचलिक कृतियों में अंचल के चित्रण के साथ-साथ अंचल का उद्घाटन मुख्य होता है। आंचलिक उपन्यासों में अंचल विशेष की आत्मा की प्रस्तुति होती है। आंचलिकता प्रधान उपन्यास अंचल के बाह्य से अधिक तथा 'आंतरिक' से कम सम्बद्ध होती है और आंचलिक उपन्यास अंचल के 'आंतरिक' से पूर्णतः जुड़ी रहती है। आंचलिकता प्रधान उपन्यासों में आंचलिकता का संस्पर्श किसी एक भूभाग के विशिष्ट जीवन का सम्पूर्ण चित्रण नहीं होता जबकि आंचलिक उपन्यासों में विशिष्ट अंचल का सम्पूर्ण चित्रण होता है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के मतानुसार, ''वस्तुतः आंचलिक उपन्यास आज के उपन्यासों की एक शक्तिशाली परिणत पद्धति है, वह हिन्दी उपन्यास का नवीनतम विकास है।''4 आंचलिक उपन्यासों को चारित्रिक-उपन्यास कहना सर्वथा अनुपयुक्त है, क्योंकि आंचलिक उपन्यासों में चरित्र-चित्रण की अपेक्षा वातावरण पर अधिक ध्यान रहता है। उपन्यास साहित्य की नवीनता और साहित्यिक प्रगति को लक्ष्य में रखकर डॉ. ओमानंद सारस्वत ने 'नये उपन्यासों' की दृष्टि से पाँच वर्गों की चर्चा की है। उनमें लघु उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, नायकहीन उपन्यास, सहकारी उपन्यास और कथाहीन उपन्यास माने गए हैं।5 स्पष्टतः उन्होंने आंचलिक उपन्यास को स्वतंत्र साहित्यिक विद्या के रूप में प्रतिष्ठा देकर नयी प्रवृत्ति के अंतर्गत ग्रहण किया है।

उपन्यास में 'आंचलिक' विशेषण लगने पर उसको 'आंचलिक उपन्यास' कहा जाता है। वस्तुतः जो उपन्यास आंचलिक विशेषताओं से युक्त हो, वह आंचलिक उपन्यास है। वस्तुतः आंचलिक उपन्यास जनपदीय जीवन का चित्रण प्रस्तुत करता है। यह चित्रण जितना सूक्ष्म और तलस्पर्शी होगा, आंचलिक उपन्यासकार उतना ही कृतकार्य होगा।6 डॉ. राधेश्याम कौशिक के अनुसार - जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र बिम्बात्मक चित्रण हो, उन्हें आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।7 'मैला आंचल' की भूमिका में फणीश्वरनाथ रेणु की परिभाषा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यथा- ''यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है.... मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर-इस उपन्यास का कथा-क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है चंदन भी, सुंदरता भी है कुरूपता भी। मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''8 स्थूल रूप से आंचलिक उपन्यास के प्रमुख तत्व निम्नलिखित परिगणित किए जा सकते हैं-

(एक) किसी विशिष्ट अंचल की भौगोलिक स्थिति

(दो) कथानक का आंचलिक आधार और उसकी क्षीणता,

(तीन) चरित्र विकास में अंचल का योग

(चार) वातावरण नायकत्व के रूप में

(पाँच) भाषा, संवाद और शैली में आंचलिक संस्पर्श

(छः) आंचलिक वातावरण और स्थानीय रंग

(सात) अंचल की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का चित्रण

(आठ) लोक तत्व

(नौ) आंचलिक संस्कृति का उद्घाटन

(दस) जातीय भिन्नता में एकता के दर्शन

(ग्यारह) जन-जागरण की दिशाओं का संकेत

(बारह) विशिष्ट लोकोन्मुखी दृष्टिकोण

वस्तुतः आंचलिकता एक दृष्टि है। डॉ. ज्ञानचंद गुप्त के शब्दों में ''आंचलिक उपन्यास की आंतरिक अन्विति बहुस्तरीय एवं संश्लिष्ट होती है। उसकी परस्पर लिपटी तहों में गुंथे हुए प्रसंग, घटनावलियाँ, मनोस्थितियों के आवर्त अपने पारस्परिक रचाव में ही सारी विद्रूपता एवं जटिलता को

www.ignited.in

द्योतित करते हैं।''9 आंचलिक उपन्यासों में आंचलिक भाषा भिन्न-भिन्न अंचलों के अनुसार प्रयुक्त की जाती है। पूर्णिया जिले की भाषा का प्रयोग 'मैला आंचल' में, मध्य प्रदेश के बस्तर की आदिम जातियों की भाषा का प्रयोग 'जंगल के फूल' में, मछुओं की बम्बइयां मराठी का प्रयोग 'सागर, लहरें और मनुष्य' में देखा जा सकता है। कहावतों-मुहावरों का प्रयोग भी द्रष्टव्य है- मटियामेट करना, कड़वा घूँट पीकर रह जाना, साठा पर पाठा होना, छटी का दूध याद करा देना आदि। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आंचलिक उपन्यासों में 'नायक' का मोह नहीं मिलता। ऐसा लगता है कि वहाँ सम्पूर्ण अंचल ही नायक है। उदाहरणार्थ 'बहती गंगा' में कोई भी व्यक्ति नायक के रूप में नहीं उभरता, वहाँ तो एक पूरा नगर ही नायक नजर आता है। अधिकांश आंचलिक उपन्यासों की शैली वर्णनात्मक है। आंचलिक उपन्यासों में किसी अंचल की सजीवता के लिए स्थान, संवाद, वातावरण, प्रसंग परिस्थिति आदि के वर्णन में प्रादेशिकता का प्रभाव रहता है। उदाहरणार्थ 'कबूतरखाना' में महाराष्ट्र प्रदेश की मराठी बोली का, 'बलचनमा' में बिहार प्रदेश की बोली का, 'देवताओं के देश' में पर्वतीय प्रदेश की पर्वतीय भाषा का, 'चिट्ठीरसैन' में कूर्मांचल की भाषा की झलक दिखाई देती है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कई आंचलिक उपन्यासों में लोकविश्वासों का वर्णन मिलता है। जैसे-भूत, प्रेत, जादू, टोने, टोटके, अंधविश्वास, शकुन, अपशकुन, भाग्य, संस्कार, त्यौहार, व्रत, कथा, ज्योतिष, ग्रह योग आदि। उदाहरणार्थ 'पानी के प्राचीर' में भूत के भय का चित्रण इसी प्रकार का है। आंचलिक उपन्यासों में लोक संस्कृति, लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत, लोक आख्यान, लोक नृत्य, लोकनाट्य, लोक परम्परा, लोक प्रवाह, लोककथा, लोकभाषा, लोकवार्ता, लोक साहित्य आदि का विस्तृत रूपायन हुआ है। अधिकांश आंचलिक उपन्यासों में मेले का वर्णन प्राप्त होता है। बलवंत सिंह के 'दो आकागढ़' तथा रामदरश मिश्र के 'जल टूटता हुआ' उपन्यासों में मेलों का सजीव चित्रण हुआ है।

आंचलिक वातायन से सम्पृक्त कतिपय आंचलिक उपन्यासों का नामोल्लेख करना उचित होगा। यथा- 'अलग-अलग वैतरणी' (शिव प्रसाद सिंह), 'आधा गाँव' (राही मासूम रजा) 'इमरतिया' (नागार्जुन), 'उग्रतारा' (नागार्जुन) 'एक मोठ सरसों' (शैलेश मटियानी), 'कब तक पुकारूँ' (रांगेय राघव), 'कबूतरखाना' (शैलेश मटियानी), 'गंगा मैया' (भैरव प्रसाद गुप्त), 'चिट्ठी रसेन' (शैलेश मटियानी), 'जल टूटता हुआ' (रामदरश मिश्र), 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' (वृंदावन लाल वर्मा), 'देहाती दुनिया' (शिव पूजन सहाय), 'पानी के प्राचीर' (रामदरश मिश्र), 'बलचनमा' (नागार्जुन), 'माटी की महक' (सच्चिदानंद धूमकेतु), 'बाबा बटेसरनाथ' (नागार्जुन), 'राग दरबारी' (श्रीलाल शुक्ल), 'सागर, लहरें और मनुष्य' (उदयशंकर भट्ट), 'सूखता तालाब' (रामदरश मिश्र), 'हौलदार' (शैलेश मटियानी) 'दूसरा आंचल' (सूर्यदीन यादव)।

वस्तुतः 'आंचलिकता' शब्द आंचलिक उपन्यास आंचलिक विशेषताओं की ओर संकेत करता है। 'आंचलिकता' को हम नयी शब्दावली में 'आंचलिक यथार्थ' कह सकते हैं। रसवादी दृष्टि से कहना हो तो 'आंचलिक रस' की संज्ञा दी जा सकती है। आधुनिकता के घेरे में हम इसे 'आंचलिक बोध' संज्ञित कर सकते हैं। कहने का भाव यह है कि 'आंचलिकता' को यथार्थ, रस या बोध आदि किसी भी रचनात्मक प्रतिफलन की दृष्टि से ग्रहण किया जा सकता है। कथावस्तु के चुनाव, पात्रों की भाषा, संवाद योजना, गीत संयोजन, शब्द-चित्र, ध्वनि संकेत आदि का समावेश आंचलिक उपन्यासों में सहजता से किया गया है। आंचलिक उपन्यासों में 'देशकाल' या 'वातावरण' नामक तत्व का विशेष महत्त्व है। वस्तुतः आंचलिक उपन्यास लोक संस्कृति के सफल प्रस्तोता हैं।

संदर्भ सूची:

1. इन्द्रनाथ मदान, आज का हिंदी उपन्यास, पृ. 60

2 'वातायन' मासिक पत्रिका, 'सृजन मूल्यांकन अंक' पृ. 6

3. मक्खन लाल शर्मा, हिन्दी उपन्यास: सिद्धान्त और समीक्षा, पृ. 118

4. प्रकाश वाजपेयी, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, आचार्य नंददुलारे वाजपेयी द्वारा लिखित भूमिका, पृ. 1

5. ओमानंद सारस्वत, वातायन, मूल्यांकन विशेषांक, पृ. 77

6. प्रकाश वाजपेयी, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, पृ. 10

7. राधेश्याम कौशिक, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, पृ. 13

8. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, (भूमिका)

9. ज्ञानचंद गुप्त, आंचलिक उपन्यास: संवेदना और शिल्प, पृ. 15

Corresponding Author

Suman*

M.Phil. (Hindi) NET, Village Bhodiya Bisnoiya, Distric Mandi Adampur, HIsar